UNIVERSITY NEWS 19 SEPTEMBER 2026

AMAR UJALA

एडीआर के प्रति किया जागरूक

लखनऊ। लविवि के इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज ने शुक्रवार को 6वें राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस सप्ताह-2026 के तहत विद्यार्थियों को फार्माकोविजिलेंस और प्रतिकूल औषधि प्रतिक्रिया (एडीआर) रिपोर्टिंग के प्रति जागरूक किया। यह कार्यक्रम नेशनल कोऑर्डिनेशन सेंटर-फार्माकोविजिलेंस प्रोग्राम ऑफ इंडिया (एनसीसी-पीवीपीआई) और इंडियन फार्माकोपिया कमीशन (आईपीसी) के तत्वावधान में हुआ। निदेशक पुष्पेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि फार्मासिस्टों की जिम्मेदारी है कि वे संदिग्ध एडीआर को पहचानें और रिपोर्ट करें। डॉ. रवि शंकर भट्ट ने औषधि सुरक्षा सूचनाओं के व्यवस्थित संकलन पर चर्चा की। (माई सिटी रिपोर्टर)

I NEXT

एलयू में जागरूकता कार्यक्रम

LUCKNOW (18 Sep): लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में छठे राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस सप्ताह-2026 के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ. 23 सितंबर तक चल रहे सप्ताह का उद्देश्य विद्यार्थियों को औषधियों के दुष्प्रभावों की पहचान, प्रतिकूल औषधि प्रतिक्रिया (एडीआर) की रिपोर्टिंग, औषधियों के तर्कसंगत उपयोग और रोगी सुरक्षा के प्रति जागरूक करना था. कार्यक्रम का आयोजन भारतीय फार्माकोपिया आयोग के राष्ट्रीय समन्वय केंद्र के तत्वावधान में सीएसआइआर-सीडीआरआइ और डा. आरएमएलआइएमएस के एएमसी के समन्वय से हुआ.

NBT

'गोमती की भूमि गोमती को वापस करनी होगी'

'मैं तुम्हारी गोमती हूं' शीर्षक से हुआ स्टोरीटेलिंग और पर्यावरणीय संवाद सत्र

गोमती पुस्तक महोत्सव

[illegible]

'काकोरी ट्रेन ऐक्शन' का मंचन

[illegible]

विशेषज्ञ बताएंगे हेरिटेज से जुड़ी दिलचस्प कहानियां

[illegible]

DAINIK JAGRAN

सुरक्षित और मजबूत यूपीआइ के लिए क्यों जरूरी है शुल्क

यूपीआइ के इस्तेमाल को लेकर आम उपभोक्ताओं और छोटे दुकानदारों के बीच कुछ भ्रम देखा जा रहा है। कहीं दुकानदार कैश की मांग कर रहे हैं, तो कहीं मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) को लेकर अफवाहों का बाजार गर्म है। लेकिन हकीकत क्या है? क्या आम लोगों की जेब पर कोई असर पड़ेगा या यह कदम भारत के डिजिटल पेमेंट सिस्टम को सुरक्षा और मजबूती देने के लिए उठाया जा रहा है? आइए, आसान भाषा में समझते हैं इस पूरे गणित और इसके पीछे के कारणों को। पुलक त्रिपाठी की रिपोर्ट-

देश के हर नागरिक तक पहुंच: भारत में डिजिटल क्रांति का सबसे बड़ा प्रतीक बन चुका यूपीआइ आज आम जिंदगी की जरूरत है। वित्त वर्ष 2025-26 में यूपीआइ के जरिये रोजाना औसतन 66 करोड़ से अधिक (पूरे वर्ष में लगभग 24,162 करोड़) लेनदेन दर्ज किए जा रहे हैं। आंकड़े गवाह हैं कि यूपीआइ की सेवा अब देश के 11 में से 11वें व्यक्ति तक सफलतापूर्वक पहुंच चुकी है। सब्जी के ठेले से लेकर बड़े शापिंग माल तक, यूपीआइ अब कोई विकल्प नहीं बल्कि दैनिक जीवन का एक अपरिहार्य हिस्सा बन चुका है। आम नागरिकों के लिए, दोस्तों, परिजन को पैसे भेजना, बिजली-पानी के बिल भरना या रोजमर्रा की खरीदारी पर यूपीआइ का उपयोग पहले की तरह पूरी तरह मुफ्त रहेगा। दुकानों या मर्चेंट्स पर 10 हजार तक के किसी भी भुगतान पर ग्राहकों से कोई अतिरिक्त चार्ज नहीं लिया जाएगा।

एमडीआर का बंटवारा

- 60% हिस्सा एमडीआर शुल्क का बैंकों को जाएगा
- 25% हिस्सा तकनीकी और यूजर इंटरफेस सुधारने के लिए पेमेंट ऐप्स को
- 25% हिस्सा मर्चेंट-पेमेंट स्वीकार करने वाले सिस्टम/प्वाइंट्स को मिलेगा।

बड़े मर्चेंट्स पर मामूली शुल्क : 10,000 से अधिक की बड़ी खरीदारी पर केवल बड़े व्यापारियों पर 0.4% या अधिकतम 300 का एमडीआर शुल्क प्रस्तावित है।

छोटे व्यापारी पूरी तरह सुरक्षित : गली-मोहल्ले के छोटे और ग्रामीण दुकानदारों को इस एमडीआर से पूरी तरह बाहर रखा गया है ताकि उनके कारोबार पर कोई प्रतिकूल असर न पड़े।

टैक्स में राहत : दुकानदारों को इस प्रक्रिया में इनपुट टैक्स क्रेडिट का सीधा लाभ भी मिलेगा।

एमडीआर क्यों है बेहद जरूरी

कई लोगों के मन में सवाल है कि जब अब तक सब मुफ्त चल रहा था, तो शुल्क की आवश्यकता क्यों पड़ी? इसके पीछे तीन मुख्य तकनीकी और आर्थिक कारण हैं:

सिस्टम का रखरखाव और सर्वर मजबूती: करोड़ों ट्रांजैक्शन के बोझ को संभालने, 'टेक्निकल फेलियर' को रोकने और सर्वर को चौबीस घंटे चालू रखने के लिए भारी इन्फ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होती है।

साइबर सुरक्षा का मजबूत कवच : फ्राड और हैकिंग को रोकने के लिए नेटवर्क की सुरक्षा पर सालाना लगभग 20,000 करोड़ का खर्च आता है।

कैश हैंडलिंग से सस्ता : नोटों की छपाई, उनके परिवहन और रख-रखाव पर होने वाले खर्च की तुलना में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश करना देश की अर्थव्यवस्था के लिए कहीं अधिक फायदेमंद है।

विदेशी एकाधिकार और वैश्विक दबाव से सुरक्षा

- वर्तमान में गूगल पे और फोनपे जैसी विदेशी या अमेरिकी स्वामित्व वाली ऐप्स का भारतीय पेमेंट मार्केट में 80% से अधिक कब्जा रहा है।
- यदि यूपीआइ सिस्टम से कोई राजस्व नहीं मिलेगा, तो बैंकों और एनपीसीआइ को नुकसान होगा और विदेशी ऐप्स का वर्चस्व बना रहेगा।

"यूपीआइ ने देश के पूरे क्रय विक्रय की प्रणाली को बदल दिया है। बीते वित्तीय वर्ष में देश में यूपीआइ के माध्यम से करीब 25 हजार करोड़ ट्रांजेक्शन किए गए हैं। -प्रो. अरविंद मोहन, अर्थशास्त्री, लवि।"

"एमडीआर को लेकर भ्रम दूर होना जरूरी है। प्रस्तावित व्यवस्था का उद्देश्य लोगों पर बोझ डालना नहीं, बल्कि डिजिटल भुगतान व्यवस्था को मजबूत करना है। – सुधीर गुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक, इंडियन बैंक, लखनऊ।"

HINDUSTAN

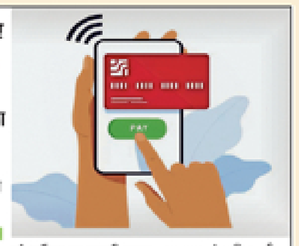

गोमती पुस्तक महोत्सव में बिखरे साहित्य, पर्यावरण, इतिहास और देशभक्ति के रंग, वक्ताओं ने रखे विचार

बच्चों ने सुनी कहानी, मुद्दों पर हुआ मंथन

आयोजन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अनुशासन और त्याग फौजी जीवन की पहचान

[illegible]

अनीता भटनागर जैन ने कहानी से दिया संदेश

[illegible]

गोमती और सहायक नदियों पर गहन मंथन

[illegible]

अनुवाद से आपस में जुड़तीं संस्कृतियां

[illegible]

AMAR UJALA

गोमती को बचाने के लिए नदी को जगह देना जरूरी : प्रो. वेंकटेश

गोमती पुस्तक महोत्सव में डॉ. मीनू खरे के साथ चर्चा करते प्रोफेसर वेंकटेश दत्ता। अमर उजाला

[illegible]

■ **कहानी से कैरिकेचर तक, बच्चों ने दिखाई रचनात्मकता** : [illegible]

■ **अनुशासन और त्याग फौजी जीवन की पहचान:** [illegible] (संवाद)

AMAR UJALA

166 सवालों से परखी जाएगी विद्यार्थियों की मानसिक सेहत

लखनऊ विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए नई पहल

माई सिटी रिपोर्टर

कुलपति ने जारी किया पोस्टर, आज होगा एमओयू

लखनऊ। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय नई पहल करने जा रहा है। विश्वविद्यालय, मानसिक शक्ति फाउंडेशन और फ्रीडम फ्रॉम पावर्टी ट्रस्ट (एफएफपीटी) के बीच प्रस्तावित समझौते के तहत विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति और तनाव के स्तर का प्राथमिक आकलन किया जाएगा। विद्यार्थियों को 166 सवालों वाली प्रश्नावली भरनी होगी। इसमें भावनात्मक और मानसिक स्थिति से जुड़े सवाल होंगे। जवाबों के आधार पर तनाव के स्तर का प्राथमिक आकलन किया जाएगा।

प्रस्तावित एमओयू के तहत रिलीफ : सपोर्ट, हील, थ्राइव एप का शुक्रवार को पोस्टर जारी किया गया। समझौता ज्ञापन पर शनिवार को औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किए जाएंगे।

विवि के अनुसार यह प्रक्रिया मानसिक तनाव की शुरुआती पहचान और समय पर सहायता उपलब्ध कराने के लिए स्क्रीनिंग के रूप में काम करेगी। जरूरत के अनुसार उन्हें काउंसलिंग, स्वयं सहायता सामग्री या विशेषज्ञ मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की ओर मार्गदर्शन किया जा सकेगा।

कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी ने कहा कि विद्यार्थियों की मानसिक और भावनात्मक सेहत उनके शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास का अभिन्न हिस्सा है। प्रयास है कि तनाव या भावनात्मक चुनौती की स्थिति में विद्यार्थियों को समय रहते सहायता मिल सके।

पोस्टर जारी करने के अवसर पर मानसिक शक्ति के निदेशक डॉ. अमरेश श्रीवास्तव, एफएफपीटी के उपाध्यक्ष डॉ. हेमंत कुमार दीक्षित, डीन साइंस प्रो. शीला मिश्रा, डीन छात्र कल्याण प्रो. अमिता कनौजिया, रैंकिंग निदेशक प्रो. गीतांजलि मिश्रा, मनोविज्ञान विभाग की प्रो. मानिनी श्रीवास्तव और लविवि के प्रवक्ता प्रो. मुकुल श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

पोस्टर विमोचन के दौरान कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी, मानसिक शक्ति फाउंडेशन के डॉ. अमरेश श्रीवास्तव, एफएफपीटी के डॉ. हेमंत कुमार दीक्षित व अन्य मौजूद रहे। स्रोत: विश्वविद्यालय

■ **शिक्षकों और मेंटर्स को मिलेगा प्रशिक्षण** : एमओयू के तहत तनाव प्रबंधन, चिंता, अवसाद, परीक्षा के दबाव और आत्महत्या रोकथाम जैसे विषयों पर कार्यशालाएं और जागरूकता कार्यक्रम होंगे। शिक्षकों, मेंटर्स और छात्र स्वयंसेवकों को विद्यार्थियों में मानसिक तनाव या संकट के शुरुआती संकेत पहचानने के लिए प्रशिक्षित करने की भी योजना है।

कैडेट सृष्टि ने देश में किया प्रतिनिधित्व

लखनऊ। एलयू की बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा एवं 63 यूपी बटालियन एनसीसी की कैडेट सृष्टि पांडेय ने दिल्ली में प्रतिष्ठित ऑल इंडिया थल सैनिक कैंप सफलतापूर्वक पूरा किया। उन्होंने फायरिंग स्पर्धा में उत्तर प्रदेश निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया।

एआईटीएससी में चयन से पूर्व कैडेट सृष्टि ने पांच लगातार प्रशिक्षण एवं चयन कैंपों को पूरा किया। प्रशिक्षण के दौरान अनुशासन, शारीरिक क्षमता, धैर्य का निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। राष्ट्रीय स्तर के इस कैंप में देश के विभिन्न राज्यों के कैडेट्स के साथ संवाद एवं सहभागिता की।

टैगोर लाइब्रेरी का वाचनालय कक्ष छात्रों के लिए फिर खुलेगा

लखनऊ, प्रमुख संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के टैगोर पुस्तकालय का वाचनालय कक्ष छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों के लिए फिर खोला जाएगा। वाचनालय में एक समय में 370 विद्यार्थी अध्ययन कर सकेंगे।

पीएम ऊषा योजना के तहत चल रहे नवीनीकरण एवं अनुरक्षण कार्यों के कारण यह कक्ष पिछले कई महीनों से बंद था, जिससे विद्यार्थियों को अध्ययन में असुविधा हो रही थी। विद्यार्थियों की शैक्षणिक सुविधाओं को प्राथमिकता देते हुए कुलपति प्रो. जे.पी. सैनी ने संबंधित अधिकारियों को नवीनीकरण कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए थे।

दवाओं के दुष्प्रभाव पर किया जागरूक

एलयू के इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज की ओर से 6वें राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस सप्ताह- के अंतर्गत शुक्रवार को जागरूकता कार्यक्रम किया गया। विद्यार्थियों को दवाओं के दुष्प्रभावों की पहचान कराई गई।

समझौता आज: विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक कल्याण और समग्र व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने के लिए एफएफपीटी के साथ शनिवार को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होगा।

AMAR UJALA

आज से खुलेगा टैगोर लाइब्रेरी का वाचनालय

370 विद्यार्थी कर सकेंगे अध्ययन, 50 अतिरिक्त छात्रों के भी बैठने की व्यवस्था

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। एक साल से मरम्मत और सुंदरीकरण के चलते बंद चल रहे लखनऊ विश्वविद्यालय के टैगोर पुस्तकालय का वाचनालय कक्ष शनिवार से छात्र-छात्राओं के लिए फिर से खुल जाएगा। छात्र-छात्राओं और विशेष रूप से शोधार्थियों के लिए यह राहत भरी खबर है। यहां 370 विद्यार्थी एक साथ बैठकर अध्ययन कर सकेंगे। जरूरत पड़ने पर 50 अतिरिक्त छात्रों के बैठने की भी व्यवस्था की जा सकेगी।

अवैतनिक पुस्तकालयाध्यक्ष रोली मिश्रा ने बताया कि यह कक्ष प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान के तहत चल रहे नवीनीकरण और मरम्मत कार्य के कारण कई महीनों से बंद था। नवीनीकरण के तहत दीवारों की सीलन दूर करने के लिए दीवारों और फर्श पर टाइल्स लगाई गई हैं। खराब मेजों की लाइटों और पंखों को भी ठीक किया गया है। आवश्यक रंगरोगन और अन्य कार्य भी कराए गए। यह विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए अध्ययन के अनुकूल वातावरण प्रदान करेगा।

कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने बताया कि वाचनालय के संचालन से विद्यार्थियों को परीक्षाओं की तैयारी में मदद मिलेगी। शोध कार्यों को आगे बढ़ाने में भी यह कक्ष सहायक होगा।

मरम्मत कार्य के चलते एक वर्ष से था बंद वाचनालय

टैगोर लाइब्रेरी का वाचनालय। स्रोत: विवि

■ **1937 में पड़ी थी नींव, लाइब्रेरी में पांच लाख से ज्यादा पुस्तकें :** टैगोर लाइब्रेरी देश के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में से एक है। यहां पांच लाख से अधिक पुस्तकें मौजूद हैं। पुस्तकालय और वाचनालय के वर्तमान भवन की नींव वर्ष 1937 में रखी गई थी। पुस्तकालय का नक्शा अपने समय के मशहूर आर्किटेक्ट ग्रिफिन ने तैयार किया था। उनकी मृत्यु के बाद नर्लीकर ने इसे पूरा किया। लविवि की स्थापना के बाद रवींद्रनाथ टैगोर भी कई बार यहां आए। फिर उनके निधन के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय का नाम उनके नाम पर कर दिया गया था।

AMAR UJALA

जर्मन-रशियन भाषाओं के विद्यार्थी तैयार, गुरुजनों का इंतजार

लखनऊ विश्वविद्यालय में दस वर्ष से दोनों भाषाओं के शिक्षकों की नहीं हुई नियुक्ति, इस सत्र के लिए जारी हो चुका है विज्ञापन

अभिषेक सहज

लखनऊ। विदेशी भाषाओं के अध्ययन के लिए कभी विद्यार्थियों की पहली पसंद रहे लखनऊ विश्वविद्यालय के जर्मन और रशियन भाषा पाठ्यक्रम अब शिक्षकों के अभाव में ठप हैं। इन भाषाओं को सीखने की चाह रखने वाले विद्यार्थी तो बहुत हैं लेकिन कोई पढ़ाने वाला कोई नहीं है। विद्यार्थी आते हैं पूछताछ करते हैं और निराश होकर लौट जाते हैं।

लविवि के प्रवक्ता प्रो. मुकुल श्रीवास्तव के मुताबिक शिक्षकों की भर्ती के लिए विज्ञापन जारी हो चुका है। प्रक्रिया जारी है, योग्य शिक्षक मिलने पर नियुक्ति की जाएगी। जानकारी के मुताबिक, रशियन पढ़ाने वाली प्रोफेसर साबिरा हबीब के 2015 में और

जर्मन भाषा की शिक्षिका चारू मनोज के 2016 में सेवानिवृत्त होने के बाद इन भाषाओं के लिए नियमित नियुक्तियां नहीं हो सकीं। इसके बाद पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों की संख्या भी लगातार प्रभावित हुई। वर्ष 2018 में जर्मन और रशियन भाषा में 60-60 सीटें होने के बावजूद जर्मन की प्रवेश परीक्षा के लिए केवल पांच और रशियन के लिए मात्र एक आवेदन आया था।

खास बात यह रही कि इसी दौरान लविवि से संबद्ध महाविद्यालयों में जर्मन और रशियन के सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों की सीटें भर रही थीं। इससे साफ पता चलता है कि विद्यार्थियों में विदेशी भाषा सीखने की रुचि थी, लेकिन विशेषज्ञ शिक्षक उपलब्ध नहीं था, जिसका सीधा असर विद्यार्थियों की संख्या पर पड़ा। विश्वविद्यालय की विभागीय वेबसाइट पर भी इन दोनों भाषाओं के पाठ्यक्रम दर्ज हैं।

अंग्रेजी एवं मॉडर्न यूरोपियन लैंग्वेज विभाग की अध्यक्ष प्रो. नाजनीन खान ने बताया कि जर्मन और रशियन भाषा के लिए हर वर्ष काफी संख्या में अब भी छात्र पूछताछ करने के लिए आते हैं लेकिन शिक्षक न होने पर निराश लौट जाते हैं। उन्होंने बताया कि विभाग में फ्रेंच पढ़ाने के लिए दो शिक्षक हैं और विद्यार्थियों की संख्या 150 है। कहा कि विदेशी भाषा सीखाने वाले शिक्षक मिल जाएं तो यहां भी विद्यार्थियों की कमी नहीं होगी।

दोनों ही भाषाओं में रोजगार के अवसर

जर्मन और रशियन का ज्ञान उच्च शिक्षा, अनुवाद, पर्यटन, कॉर्पोरेट क्षेत्र और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में रोजगार के अवसर खोल सकता है। जर्मन भाषा जर्मनी की कंपनियों, उच्च शिक्षा, पर्यटन और अनुवाद क्षेत्र में अवसर खोलती है, जबकि रशियन भाषा का ज्ञान भारत-रूस संबंधों, रक्षा सहयोग, व्यापार, पर्यटन और अनुवाद-दुभाषिया सेवाओं में उपयोगी हो सकता है।

सेना के अधिकारियों को भी पढ़ाने की थी योजना

लविवि ने 2019 में विदेशी और प्राचीन भाषाओं के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा व उन्नत डिप्लोमा पाठ्यक्रमों को विस्तार देने की योजना बनाई थी। इसमें जर्मन और रशियन समेत चार विदेशी भाषाओं को शामिल किया गया था। प्रस्तावित व्यवस्था में सेना, पुलिस और कॉर्पोरेट क्षेत्र के अधिकारियों के साथ अन्य कॉलेजों के विद्यार्थियों को भी इन पाठ्यक्रमों से जोड़ने की योजना थी। उस समय विवि ने सेवानिवृत्त शिक्षकों को अतिथि शिक्षक के रूप में लेने की बात भी कही थी लेकिन इसे लागू नहीं किया जा सका।

UNIVERSITY NEWS 19 SEPTEMBER 2026

DAINIK JAGRAN

मानसिक शक्ति कठिनाइयों से बचना नहीं भावनाओं को समझना

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के काउंसलिंग एवं गाइडेंस सेल की ओर से हैप्पी थिंकिंग लेबोरेटरी, मनोविज्ञान विभाग के सहयोग से शुक्रवार को 'छात्रों में मानसिक शक्ति एवं लचीलापन' विषय पर विशेष सत्र आयोजित हुआ। कार्यक्रम एपटीएल, ओएनजीसी भवन में कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी के संरक्षण में हुआ।

विशिष्ट वक्ता प्रो. अमरेश श्रीवास्तव, प्रोफेसर एमेरिटस आफ साइकियाट्री, वेस्टर्न यूनिवर्सिटी, कनाडा ने विद्यार्थियों से मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और चुनौतियों से निपटने के उपायों पर संवाद किया। उन्होंने कहा कि मानसिक शक्ति का अर्थ कठिनाइयों से बचना नहीं, बल्कि भावनाओं को समझना, परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालना, असफलताओं से सीखना और जरूरत पड़ने पर सहायता लेना है। काउंसलिंग एवं गाइडेंस सेल की निदेशक डा. मानिनी श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों को सहयोग और समर्थन उपलब्ध कराने पर जोर दिया।

DAINIK JAGRAN

'भाषाओं संग संस्कृतियों को भी जोड़ता है अनुवाद'

पुस्तक महोत्सव में **गोमती संरक्षण** फौजी जीवन और स्वतंत्रता संग्राम पर हुए संवाद

जागरण संवाददाता • लखनऊ : अनुवाद भाषाओं के साथ अलग-अलग संस्कृतियों और क्षेत्रों के लोगों को जोड़ता है और विश्व साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में मदद करता है। गोमती पुस्तक महोत्सव में शुक्रवार को 'अनुवाद : संस्कृति के सेतु' विषय पर आयोजित संवाद का सार यही है।

वक्ता सूर्यकांत शर्मा ने अनुवाद की तुलना नदी पर बने पुल से करते हुए कहा कि मुहावरों, लोकोक्तियों और सांस्कृतिक संदर्भों का सही रूपांतरण भाषा और समाज की समझ को समृद्ध करता है। स्मिता सिन्हा ने कहा कि अनुवाद में मूल कृति की आत्मा और लेखक की जीवन-दृष्टि सुरक्षित रहनी चाहिए। सिमपाल कौर ने कहा कि एआइ ने अनुवाद के नए अवसर खोले हैं, लेकिन भाव और संवेदना को पूरी तरह बनाए रखना अब भी चुनौती है। संवाद का समन्वय पल्लवी विनोद ने किया। इसके बाद कल्हण कृत राजतरंगिणी पर आधारित किशोर उपन्यास शृंखला पर विशेष संवाद हुआ। सत्र का समन्वय कर रहीं लेखिका चंद्रकांता ने बताया कि यह शृंखला किशोरों को ध्यान में रखकर इतिहास को रोचक साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करती है। सुधाकर अदीब ने कहा कि इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए सीख का माध्यम है। मलिक राजकुमार ने कहा कि राजतरंगिणी कश्मीर के लंबे ऐतिहासिक कालखंड का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। सेना से जुड़े सत्र में आरजे प्रतीक और नवनीत ग्रेवाल ने फौजी जीवन, अनुशासन, त्याग और सैन्य संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर संवाद किया। नवनीत ग्रेवाल ने कहा कि सेना के लिए देश सबसे पहले है और इसके लिए अनुशासन व त्याग जरूरी है। शाम को भारतेंदु नाट्य अकादमी के कलाकारों ने 'काकोरी एक्शन' नाट्य प्रस्तुति दी। काकोरी घटना पर आधारित इस नाटक में क्रांतिकारियों के साहस, संघर्ष और बलिदान को प्रस्तुत किया गया। कैलीग्राफी आर्टिस्ट आयशा इमरान ने बच्चों को सुंदर अक्षर लिखने की बुनियादी तकनीकें सिखाईं। कलाकार सुमन विश्वकर्मा ने कैरिकेचर कार्यशाला में चेहरे की विशेषताओं को उभारकर चित्र बनाने का तरीका बताया।

गोमती का प्राकृतिक स्वरूप बचाना है तो वापस करें उसकी भूमि : 'मैं तुम्हारी गोमती हूं' सत्र में श्रोताओं ने गोमती की कहानी सुनी। ब्लू ड्रम फाउंडेशन की अध्यक्ष डा. मीनू खरे ने गोमती के अतीत, उसके बदलते स्वरूप और समाज के साथ उसके रिश्ते की कहानी प्रस्तुत की, जबकि नदी विशेषज्ञ प्रो. वेंकटेश दत्ता ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गोमती की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की। डा. खरे ने कहा कि शहर के जीवन और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा थी। उसके आसपास मछलियां, पक्षी, पेड़-पौधे, खेत और विविध जीव-जंतु थे। समाज का नदी से गहरा रिश्ता था। शहर के विस्तार, बढ़ती आबादी और बदलती जरूरतों के साथ यह रिश्ता धीरे-धीरे कमजोर होता गया।

प्रो. दत्ता ने कहा, यदि गोमती के प्राकृतिक स्वरूप को बचाना है तो उसकी भूमि उन्हें वापस करनी होगी। इससे पहले गोमती की 'मेडिकल रिपोर्ट' को भी सामने रखा गया, जिसके माध्यम से नदी की वर्तमान सेहत पर चर्चा की गई। प्रो. दत्ता ने कहा, माइक्रोप्लास्टिक सहित विभिन्न प्रदूषकों और उनके नदी के पारिस्थितिक तंत्र को बिगाड़ रहे हैं।

'मैं तुम्हारी गोमती हूं' सत्र को संबोधित करतीं ब्लू ड्रम फाउंडेशन की अध्यक्ष डा. मीनू खरे, साथ में प्रो. वेंकटेश दत्ता • एसओईओ

कहानी सुनातीं पूर्व आइएएस अधिकारी डा. अनीता भटनागर जैन • सौ.

कहानी से दिया एकता में बल का संदेश

पूर्व आइएएस अधिकारी और बाल साहित्यकार डा. अनीता भटनागर जैन ने बच्चों को वायु प्रदूषण पर आधारित अपनी कहानी 'कुछ करोगे क्या?' सुनाई। कहानी के जरिए एकता में बल होने का संदेश देने के साथ उनकी जिम्मेदारी का एहसास कराया। उन्होंने कहा कि पृथ्वी सभी जीवित प्राणियों का घर है। पशु-पक्षियों के भी अधिकार हैं। कहानी पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देने वाले सभी बच्चों को डा. जैन ने अपनी पुस्तकें दीं।

TIMES OF INDIA

Literary window to Dalit life at book fair

Anjanaya Singh | TNN

Lucknow: Where stories travel across languages, generations and social backgrounds, literature on caste and equality is drawing the attention of young readers. From autobiographies documenting discrimination, to work tracing the history of marginalised communities, Dalit literature has emerged as a significant section at the Gomti Book Festival.

Books such as Omprakash Valmiki's 'Joothan', Bama's 'Karukku', and Sharankumar Limbale's 'The Outcaste' are finding readers alongside work, including B R Ambedkar's 'Who Were the Shudras?' and 'The Untouchables', as well as literature on the Dalit Panthers movement. The collection also features writings of social reformer Jyotirao Phule, along with works by authors and thinkers who have examined caste, identity, dignity, social justice and resistance.

For many students, buying these books is an opportunity to understand experiences different from their own.

"Students are increasingly picking up such books because they want to understand caste, equality and social reform through the writings of those who challenged existing social structures," said a publisher at the festival, Kamla Kumar.

Sunil Kumar

TURNING THE PAGE

TIMES OF INDIA

Odissi leaves its mark at WhiteSwan fest

Times News Network

Lucknow: Rome-based artist and UN peace adviser Baisali Mohanty on Friday presented Odissi, a classical dance form from Odisha, at the 11th WhiteSwan Responsible Art Festival at Lucknow University.

Mohanty, who works at the intersection of performing arts and peacekeeping, presented Odissi as part of a programme featuring music, dance and Indian classical traditions. Her performance focused on using the arts as a means of connecting people and promoting dialogue across cultures.

Romanian artist Baisali Mohanty

"Art has the power to bring people together without the barriers of language, geography or identity. Through music and dance, we can create a space where people listen to each other and understand different cultures," Mohanty said.

The programme also featured a flute recital for mindfulness by Mohan Godbole of Indore. Bengali classical vocalist Mollika Chakraborty, ghazal singer Prabha Srivastava, and student artists from Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya and Lucknow University also performed at the event. "We aim to build the WhiteSwan Art Festival into a global platform," said WhiteSwan Art Festival founder Anjali Nigam.

TIMES OF INDIA

Resilience can be learned, students told

Times News Network

Lucknow: Mental strength should not be viewed as the absence of difficulties but as the ability to understand and manage emotions, adapt to challenging situations, learn from setbacks and seek support when necessary, said Professor Emeritus of Psychiatry at Western University, Canada, Amresh Shrivastava.

He was speaking at a special session on 'Mental Strength and Resilience in Students' organised by Counselling and Guidance Cell of Lucknow University in collaboration with Happy Thinking Laboratory, under the patronage of vice-chancellor Jai Prakash Saini, on Friday.

Shrivastava also interacted with students and spoke about mental wellbeing, resilience and healthy ways of coping with academic and personal challenges. He further stressed the importance of recognising signs of emotional distress at an early stage and seeking timely professional help.

Director of counselling and guidance cell, Manini Srivastava, said the university was working towards creating a campus environment where students feel supported and empowered to deal with challenges.

Director, Happy Thinking Laboratory, Archana Shukla, emphasised that resilience can be developed through self-awareness, positive coping mechanisms and supportive relationships.

The session at LU saw discussions on mental wellbeing

AMRIT VICHAR

इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज के कार्यक्रम में प्रतिभागी।

प्रतिकूल दवाओं की पहचान जरूरी

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में 6वें राष्ट्रीय फार्माकोविजिलेंस सप्ताह-2026 के तहत जागरूकता कार्यक्रम हुआ। निदेशक प्रो. पुष्पेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि फार्मेसी प्रोफेशनल्स की जिम्मेदारी है कि संदिग्ध प्रतिकूल औषधि प्रतिक्रियाओं की पहचान कर उचित रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें। कार्यक्रम में एडीआर रिपोर्टिंग, तर्कसंगत औषधि उपयोग, रोगी सुरक्षा और नियामक तंत्र पर चर्चा हुई। आयोजन नेशनल कोऑर्डिनेशन सेंटर फार्माकोविजिलेंस प्रोग्राम ऑफ इंडिया, इंडियन फार्माकोपिया कमीशन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, सीएसआईआर-सीडीआरआई, एसजीपी, फार्माकोलॉजी विभाग और डॉ. आरएमएलआईएमएस के समन्वय से हुआ।

AMRIT VICHAR

गोमती पुस्तक महोत्सव | देखने को मिला स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानों तक का सजीव चित्रण

रचनात्मकता और 'काकोरी एक्शन' का जीवंत मंचन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : पांचवें गोमती पुस्तक महोत्सव के सातवें दिन शुक्रवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स ग्राउंड में साहित्य, पर्यावरण, इतिहास, अनुवाद और सैन्य जीवन से जुड़े विविध कार्यक्रमों की धूम रही। महोत्सव के इस विशेष दिन पर बच्चों की कलात्मकता से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानों तक का सजीव चित्रण देखने को मिला।

ब्लू फाउंडेशन की ओर से आयोजित 'मैं तुम्हारी गोमती हूं' विषयक संवाद में गोमती नदी के इतिहास और पर्यावरणीय चुनौतियों पर चर्चा हुई। फाउंडेशन की अध्यक्ष डॉ. मीनू खरे ने स्टोरीटेलिंग और नज्म के माध्यम से गोमती के साथ शहर के पुराने भावनात्मक रिश्ते को याद दिलाया। उन्होंने कहा कि गोमती कभी हमारी संस्कृति और जीवन का केंद्र थी, जिससे समाज का नाता अब कमजोर पड़ गया है।

नदी विशेषज्ञ प्रो. वेंकटेश दत्ता ने कहा कि नदी केवल पानी की धारा नहीं, बल्कि एक जीवंत जैविक तंत्र है। गोमती के संरक्षण के लिए इसके प्रवाह और प्राकृतिक इकोसिस्टम को पर्याप्त जगह देना अनिवार्य है।

इससे पहले डॉ. अनीता भटनागर जैन ने कहानी के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण और प्रदूषण के प्रति जागरूक किया।

'अनुवाद : संस्कृति के सेतु' सत्र में वक्ताओं ने माना कि अनुवाद केवल शब्दों का फेर नहीं, बल्कि भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ने का सशक्त माध्यम है। वहीं, कल्हण की 'राजतरंगिणी' पर आधारित किशोर उपन्यास शृंखला पर चर्चा करते हुए वक्ताओं ने कहा कि यह शृंखला किशोरों को इतिहास और लोककल्याण की अनमोल सीख देती है। चिल्ड्रन्स कॉर्नर में करीब 1,000 विद्यार्थियों ने कहानी, कैलीग्राफी और कैरिकेचर कार्यशालाओं में बढ़-चढ़कर अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।

नवनीत ग्रेवाल और आरजे प्रतीक ने फौजी जीवन के अनुशासन, त्याग और सैन्य संस्कृति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सेना के लिए देश सर्वोपरि है और युद्ध में सैनिकों के साथ-साथ उनका पूरा परिवार भी त्याग करता है।

दिन के आकर्षण का मुख्य केंद्र भारतेन्दु नाट्य अकादमी के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत 'काकोरी एक्शन' नाटक रहा। इस नाट्य प्रस्तुति ने स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारियों के साहस और बलिदान को मंच पर इस तरह जीवंत किया कि पूरा सभागार देशभक्ति के रंग में रंग गया।

परिचर्चा करते मीनू खरे और वेंकटेश दत्ता। • अमृत विचार

AMRIT VICHAR

सृष्टि ने थल सैनिक कैंप में किया प्रतिभाग

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय की बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा व 63 यूपी बटालियन एनसीसी की कैडेट सृष्टि पांडेय ने दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित ऑल इंडिया थल सैनिक कैंप पूरा किया। उन्होंने फायरिंग स्पर्धा में उत्तर प्रदेश निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया। एआईटीएससी में चयन से पूर्व कैडेट सृष्टि ने 5 लगातार प्रशिक्षण एवं चयन कैंपों को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस पूरी प्रक्रिया में कठोर प्रशिक्षण, अनुशासन, शारीरिक क्षमता, धैर्य और निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन की आवश्यकता थी।

VOICE OF LUCKNOW

आज से छात्र-छात्राओं के लिए खुलेगा टैगोर पुस्तकालय का वाचनालय कक्ष

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के टैगोर पुस्तकालय के वाचनालय कक्ष को छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों की सुविधा के लिए 19 सितम्बर से पुनः खोल दिया जायेगा। पीएम उषा के अंतर्गत चल रहे नवीनीकरण एवं अनुरक्षण कार्य के कारण वाचनालय कक्ष पिछले कई माह से बंद था, जिसके चलते विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को अध्ययन एवं पठन-पाठन में असुविधा का सामना करना पड़ रहा था। छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक आवश्यकताओं एवं उनकी सुविधाओं को प्राथमिकता देते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने वाचनालय कक्ष के नवीनीकरण के कार्य को शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण कराने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कुलपति के निर्देशों के क्रम में कार्यों को तेजी से आगे बढ़ाते हुए वाचनालय कक्ष को पुनः विद्यार्थियों के उपयोग के लिए तैयार किया गया है। नवीनीकरण एवं अनुरक्षण कार्य के अन्तर्गत टैगोर पुस्तकालय के वाचनालय कक्ष की दीवारों की सीलन को दूर करने के लिए वॉल टाइल्स एवं क्षतिग्रस्त फर्श के स्थान पर टाइल्स को लगाया गया है, खराब एवं बंद पड़ी मेजों की लाइटों तथा पंखों को दुरुस्त कराने के साथ-साथ आवश्यक रंगरोगन एवं अन्य कार्य कराये गये हैं। इन कार्यों के पूर्ण होने से वाचनालय कक्ष अब विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए अधिक स्वच्छ, सुव्यवस्थित, सुविधाजनक एवं अध्ययन के अनुकूल वातावरण में उपलब्ध होगा। इस कार्य को निर्धारित समय से पूर्व, पूर्ण कराने में अवैतनिक पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रो. रोली मिश्रा की निरंतर निगरानी एवं सक्रिय प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रो. रोली मिश्रा द्वारा अवकाश के दिनों में भी पुस्तकालय खुलवाकर नवीनीकरण एवं आवश्यक अनुरक्षण कार्यों को गति प्रदान की गयी, ताकि वाचनालय कक्ष को विद्यार्थियों के लिए यथाशीघ्र उपलब्ध कराया जा सके।

TIMES OF INDIA

LU's Tagore Library reading room reopens today

Times News Network

Lucknow: The reading room of Tagore Library at the University of Lucknow will reopen for students on Saturday, Sept 19, after remaining closed for nearly 18 months, the university administration said on Friday.

The facility has undergone fresh painting and other improvements, while dampness-related issues have also been addressed. Wall tiles and flooring have been repaired or replaced, and table lamps and fans have been fixed.

According to LU officials, the reading room, which has a seating capacity of around 400, had remained inaccessible during the prolonged renovation period. It is widely used by students preparing for competitive examinations as well as research scholars.

Librarian Roli Mishra said, "The reading room has been renovated keeping in mind the needs of students and research scholars. We have worked to improve the basic facilities so that students can have a more comfortable and productive space for reading and research."

Ajay Kumar

BACK TO BOOKS

VOICE OF LUCKNOW

साहित्य और देशभक्ति के रंगों से सजा गोमती पुस्तक महोत्सव

गोमती संरक्षण, फौजी जीवन और स्वतंत्रता संग्राम पर हुए संवाद; बच्चों की रचनात्मक गतिविधियों ने भी बांधा समां

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। पाँचवें गोमती पुस्तक महोत्सव के सातवें दिन साहित्य, पर्यावरण, इतिहास, अनुवाद, सैन्य जीवन और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। लखनऊ विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स ग्राउंड में हुए महोत्सव में मैं तुम्हारी गोमती हूँ, अनुवाद : संस्कृति के सेतु, कल्हण कृत राजतरंगिणी पर आधारित किशोर उपन्यास शृंखला जैसे सत्रों में विचार-विमर्श हुआ। वहीं, भारतेन्दु नाट्य अकादमी के कलाकारों ने काकोरी एक्शन नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण अध्याय को मंच पर जीवंत किया। चिल्ड्रन्स कॉर्नर में विभिन्न स्कूलों के करीब 1,000 विद्यार्थियों ने कहानी, कैलीग्राफी, कैरिकेचर और आर्ट एंड क्राफ्ट गतिविधियों में भाग लिया।

कहानी से कैरिकेचर तक, बच्चों ने दिखाई रचनात्मकता : दिन की शुरुआत बाल लेखिका एवं पूर्व आईएएस अधिकारी डॉ. अनीता भटनागर जैन के स्टोरीटेलिंग सत्र से हुई। कहानी के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण और बढ़ते प्रदूषण के प्रति जागरूक किया गया। इसके बाद कहानी आधारित क्विज हुआ, जिसमें विजेताओं को किताबें दी गईं। कैलीग्राफी आर्टिस्ट आयशा इमरान ने बच्चों को सुंदर अक्षर लिखने की बुनियादी तकनीकें सिखाईं। कलाकार शुभम विश्वकर्मा ने कैरिकेचर वर्कशॉप में चेहरे की विशेषताओं को उभारकर चित्र बनाने का तरीका बताया, जिसमें बच्चों ने अपने दोस्तों के कैरिकेचर बनाए।

गोमती को बचाने के लिए नदी को जगह देना जरूरी : प्रो. वेंकटेश दत्ता

दोपहर के सत्र में ब्लू फाउंडेशन, लखनऊ की ओर से मैं तुम्हारी गोमती हूँ विषय पर संवाद हुआ। इसमें गोमती और उसकी सहायक नदियों के इतिहास, पर्यावरणीय महत्व और मौजूदा चुनौतियों पर चर्चा की गई। ब्लू फाउंडेशन की अध्यक्ष डॉ. मीनू खरे ने गोमती और उसकी सहायक नदियों की जानकारी साझा की और कविता के माध्यम से नदी से जुड़े भावनात्मक रिश्ते को सामने रखा।

अनुवाद भाषाओं के साथ संस्कृतियों को भी जोड़ता है

संस्कृति के सेतु विषय पर आयोजित संवाद का समन्वय पल्लवी विनोद ने किया। इसमें सूर्यकांत शर्मा, प्रितपाल कौर और स्मिता सिन्हा ने अनुवाद की भूमिका और चुनौतियों पर विचार साझा किए। पल्लवी विनोद ने कहा कि अनुवाद भाषाओं के साथ अलग-अलग संस्कृतियों और क्षेत्रों के लोगों को जोड़ता है और विश्व साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में मदद करता है। सूर्यकांत शर्मा ने अनुवाद की तुलना नदी पर बने पुल से करते हुए कहा कि मुहावरों, लोकोक्तियों और सांस्कृतिक संदर्भों का सही रूपांतरण भाषा और समाज की समझ को समृद्ध करता है।

राजतरंगिणी से किशोरों को इतिहास और लोककल्याण की सीख

महोत्सव में कल्हण कृत राजतरंगिणी पर आधारित किशोर उपन्यास शृंखला पर विशेष संवाद हुआ। सत्र का समन्वय प्रसिद्ध लेखिका चंद्रकांता ने किया। उन्होंने बताया कि यह शृंखला राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की वृहत योजना का हिस्सा है और किशोरों को ध्यान में रखकर इतिहास को रोचक साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करती है। सुधाकर अदीब ने कहा कि इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए सीख का माध्यम है। मलिक राजकुमार ने कहा कि राजतरंगिणी कश्मीर के लंबे ऐतिहासिक कालखंड का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। किशोरों के लिए ऐतिहासिक साहित्य तैयार करते समय उनकी बदलती मानसिकता, तकनीकी दुनिया और रुचियों को ध्यान में रखना जरूरी है। उन्होंने कहा कि लोक साहित्य को सही संदर्भ में प्रस्तुत करने के लिए उसके व्यापक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कालखंड को समझना आवश्यक है।

काकोरी एक्शन ने स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को मंच पर किया जीवंत : शाम को भारतेन्दु नाट्य अकादमी के कलाकारों ने काकोरी एक्शन नाट्य प्रस्तुति दी। स्वतंत्रता संग्राम की ऐतिहासिक काकोरी घटना पर आधारित इस नाटक में देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले क्रांतिकारियों के साहस, संघर्ष और बलिदान को रंगमंच के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुति के जरिए काकोरी कांड से जुड़े ऐतिहासिक प्रसंगों और स्वतंत्रता आंदोलन में इसके महत्व को दर्शकों के सामने प्रभावी ढंग से रखा गया। कलाकारों के सशक्त अभिनय और प्रभावी मंचन ने दर्शकों की सराहना बटोरी और प्रस्तुति का समापन उत्साहपूर्ण माहौल में हुआ।

HINDUSTAN TIMES

Story-telling session at Gomti Book Festival

LUCKNOW: Former bureaucrat and children's author Anita Bhatnagar Jain narrated her story 'Kuch Karoge Kya' during an interactive storytelling session at the ongoing Gomti Book Festival on Friday.

Jain's story, based on air pollution, stressed the need to take responsibility for one's actions and highlighted the power of unity. The story also focused on the rights of animals and birds, the earth being the home of all living beings, and how every person's actions and inaction can affect the earth. Respondents who answered the follow-up questions were gifted copies of Jain's storybooks. **HTC**

Anita Bhatnagar Jain HT

HINDUSTAN TIMES

LU library reading room reopens today

HT Correspondent
letters@htlive.com

LUCKNOW : The reading room at the Lucknow University's Tagore Library, which remained closed for more than a year for extensive renovation and maintenance, is set to reopen on Saturday, the university announced on Friday.

Keeping academic needs and convenience of the student body in mind, Lucknow University vice-chancellor Prof JP Saini issued strict directions to the concerned officials to expedite the restoration work. Following the directions, the work was fast-tracked to reopen the reading room at the earliest.

The renovation addressed structural and environmental issues in the library. Wall tiles were installed to eliminate moisture and dampness, while damaged flooring was replaced with new tiles. Additionally, defunct desk lighting and faulty ceiling fans were repaired or replaced, along with full interior painting and other maintenance work.

"The structural and aesthetic improvements have made the reading room cleaner, better-organised, and more conducive to quiet study and academic work. The project was completed early in large part due to the active supervision and sustained efforts of Honorary Librarian Prof Roli Mishra. The reading room will now resume regular operations, providing an important resource for students preparing for upcoming examinations and pursuing advanced research," Saini said.

VOL

लविवि : प्रस्तावित एमओयू को लेकर पोस्टर जारी

लखनऊ। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक कल्याण और समग्र व्यक्तित्व विकास को संस्थागत रूप से मजबूत करने की दिशा में लखनऊ विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण पहल करने जा रहा है। इसी क्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय, मानसिक शक्ति फाउंडेशन तथा फ्रीडम फ्रॉम पावर्टी ट्रस्ट (एफएफपीटी) के बीच प्रस्तावित समझौता ज्ञापन (एमओयू) को लेकर रिलीफ: सपोर्ट हेल्प बीच नामक एप का पोस्टर जारी किया गया।

प्रस्तावित एमओयू का उद्देश्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता, मनोवैज्ञानिक स्क्रीनिंग एवं आकलन, तनाव तथा आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञ सहायता तक पहुंच के लिए व्यवस्थित तंत्र विकसित करना है। लविवि कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी ने कहा विद्यार्थियों की मानसिक एवं शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास का हिस्सा है।

SWATANTRA BHARAT

लखनऊ विश्वविद्यालय की एनसीसी कैडेट सृष्टि पांडेय ने दिल्ली में राष्ट्रीय शिविर पूरा किया

स्वतंत्र भारत लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय की बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा एवं 63 यूपी बटालियन एनसीसी की कैडेट सृष्टि पांडेय ने दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित ऑल इंडिया थल सैनिक कैंप में सफलतापूर्वक भाग लेकर प्रशिक्षण पूरा किया। उन्होंने फायरिंग प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया।ऑल इंडिया थल सैनिक कैंप में चयन से पहले कैडेट सृष्टि ने पांच लगातार प्रशिक्षण एवं चयन शिविरों को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस पूरी प्रक्रिया में कठोर प्रशिक्षण, अनुशासन, शारीरिक क्षमता और निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन की आवश्यकता थी। राष्ट्रीय स्तर के इस शिविर में देश के विभिन्न राज्यों के कैडेटों के साथ संवाद और सहभागिता के माध्यम से सृष्टि को भारत की विविध संस्कृतियों और विचारों को समझने का अवसर मिला।

NBT

- गोमती पुस्तक महोत्सव, लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर, सुबह 11 बजे।
- वाइट स्वान आर्ट फेस्टिवल का समापन, मालवीय सभागार, लखनऊ विश्वविद्यालय, दोपहर 3 बजे।